nwda.gov.in

जागरण विशेष

शैलेंद्र गोदियाल • जागरण

भावनाओं से जुड़ा तो घर-घर पहुंचा 'कल के लिए जल' अभियान

उत्तरकाशी में लोग अपने प्रियजनों की स्मृति, जन्मदिन और अपने ईष्ट देव के नाम पर कर रहे जल संरक्षण का कार्य

उत्तरकाशी: पृथ्वी पर जल की कमी नहीं है, लेकिन इसमें से पीने योग्य जल बेहद कम है। यही पीने योग्य जल मानव सभ्यता के लिए बेहद जरूरी है। पीने योग्य जल देने वाले प्राकृतिक जल स्त्रोतों के संरक्षण के लिए सरकारी प्रयासों के अतिरिक्त जनभागीदारी भी आवश्यक है।

इस दिशा में उत्तराखंड के जिला उत्तरकाशी के ग्राम बागी निवासी द्वारिका सेमवाल ने वर्ष 2022 में 'कल के लिए जल' अभियान की शुरुआत की। जिसके अब सकारात्मक परिणाम सामने आ रहे हैं। उत्तरकाशी और टिहरी के जलस्त्रोतों में अब सालभर पानी रहता है। जंगल में आग लगने की घटनाएं भी कम हो गई हैं।

इस अभियान ने लोगों को भावनात्मक रूप से जोड़ कर जल संरक्षण के लिए प्रेरित किया है। इसके अंतर्गत उत्तराखंड के कई जिलों और गांवों में लोग श्रमदान से जलकुंड और तालाबों का निर्माण कर रहे हैं।

अभियान से जुड़े लोग अपने प्रियजनों की स्मृति, जन्मदिन और अपने ईष्ट देव के नाम पर कर रहे हैं। इस तरह के प्रयासों से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की जल संचय, जन भागीदारी पहल भी साकार होती दिख ही है। प्रधानमंत्री ने इस अभियान की तस्वीर को मन की बात कार्यक्रम में शामिल कर इसकी सराहना भी की।

तीन वर्ष में 5,000 जलकुंड बनाएं: द्वारिका सेमवाल के प्रयासों के कारण ही जलकुंड एवं तालाब निर्माण ने एक अभियान का स्वरूप ले लिया। बिना सरकारी सहयोग के तीन वर्षों में 5,000 से अधिक जलकुंड बन चुके हैं। जल संरक्षण का पहला प्रयोग द्वारिका ने वर्ष 2022 में उत्तरकाशी से दस किमी दूर चामकोट गांव में किया। गांव के लोगों ने श्रमदान से पास स्थित जंगल में 3,500 जलकुंड बना डाले।

द्वारिका ने हर व्यक्ति की जल संचयन में भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए जनसंपर्क अभियान भी शुरू किया है। इसी का नतीजा है कि वर्ष 2023 में उत्तरकाशी के श्रीकालखाल, टिहरी के कांगड़ा और देहरादून में विभिन्न संगठनों व ग्रामीणों ने 500 से अधिक जलकुंड बनाए। इस वर्ष कोटियाल गांव में प्रज्वल उनियाल ने अपने पिता की स्मृति में दस तालाब, गांव की प्रधान कविता भट्ट ने अपने ससुर की स्मृति में तालाब बनाया। नैनीताल के भियाल में भी जगदीश चंद्र जीतू ने पिता की स्मृति में 150 जलकुंड व चार तालाब बनाए। उत्तरकाशी में गंगा सखी संगठन से जुड़ी 80 महिलाओं ने अपने जन्म दिवस पर कुल 400 जलकुंड बनाए। शिक्षक चैतराम सेमवाल ने प्रथम सीडीएस स्व. जनरल बिपिन रावत की स्मृति में 10 तालाब बनाए है। जिसका सकारात्मक प्रभाव भी दिखा रहा है।

महिलाएं और स्कूली बच्चे भी कर रहे भागीदारी

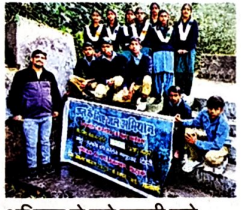

अभियान से जुड़े स्कूली बच्चे

इस अभियान के तहत एक स्कूल एक जलस्रोत की पहल बढ़ाई जा रही है। उत्तरकाशी मातली स्थित एंजेल्स इंटरनेशनल एकेडमी ने कंडारा जलस्रोत को पुनर्जीवित करने के लिए गोद लिया। उसके जलागम क्षेत्र में 10 कच्चे तालाब बनाए। टिहरी के राजकीय इंटर कालेज गालुडधार ने पडिया धारा (जलस्रोत) गोद लिए हैं। द्वारिका सेमवाल ने कहा कि कोटियाल गांव में महिलाओं के द्वारा बनाए गए जलकुंडों को लेकर प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही हैं। जिनमें महिलाओं को सम्मानित किया जाएगा।

हमारा उद्देश्य किसी भी तरह से बहते पानी को रोकना है, फिर चाहे वह वर्षाजल हो या जलस्रोत का पानी। इस अभियान को लोगों की भावनाओं से जोड़कर आंदोलन का स्वरूप दिया जा रहा है। लोग अपने प्रियजनों की स्मृति में जलकुंड व तालाब बना रहे हैं। जल संकट के समाधान की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण कदम है।

द्वारिका सेमवाल, प्रणेता, 'कल के लिए जल' अभियान

<< 'कल के लिए जल' अभियान उत्तराखंड में भावनात्मक आंदोलन का रूप ले रहा है। लोग श्रमदान करके अपने जन्मदिन व प्रियजनों की याद में जलकुंड और तालाब का निर्माण कर रहे हैं • जागरण

अतिरिक्त सामग्री पढ़ने के लिए स्कैन करें।